10/08/2020

Land Development Bank in India

कृषकों की दीर्घकालिन सारव आवश्यकताएँ भूमि विकास बैंक द्वारा पूर्ण की जाती हैं। इन बैंकों का उद्देश्य किसानों को उनकी भूमि बन्धक रखकर दीर्घकालिन सारव प्रदान करना है। ये पुराने ऋण चुकाने, अतिरिक्त भूमि खरीदने, भूमि पर स्थायी सुधार करने तथा महँगे कृषि यन्त्र खरीदने के लिए ऋण प्रदान करते हैं।

भूमि विकास बैंकों की स्थापना का श्री गणेश प्रारम्भ में मद्रास प्रान्त में हुआ, जबकि इस राज्य ने ऋण पत्रों को जारी करने एवं राज्य के प्राथमिक बैंकों को समर्थित करने के लिए सन् 1929 में केन्द्रीय भूमि बन्धक बैंक की स्थापना की। भूमि बन्धक बैंकों की प्रगति बहुत धीमी और विषम रही। स्वतंत्रता के बाद इस दिशा में विशेष प्रयास हुए और परिणामस्वरूप आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र एवं गुजरात में इनकी प्रगति तेजी से हुई। कुछ राज्यों में इन बैंकों का नाम बदलकर "प्राथमिक सहकारी कृषि एवं ग्रामविकास बैंक" कर दिया गया। प्राथमिक भूमि विकास बैंकों की संख्या जो वर्ष 1950-51 में 288 थी बढ़कर वर्तमान में 1,338 हो गई और केन्द्रीय या राज्यीय भूमि विकास बैंक 5 से बढ़कर 20 हो गए हैं।

भारत में दीर्घकालिक सारव संरचना का निर्माण भूमि विकास बैंक

Scanned with CamScanner

अथवा सहकारी कृषि एवं ग्राम विकास बैंकों के माध्यम से हुआ है। कुछ राज्यों में प्राथमिक भूमि-विकास बैंक नहीं हैं किन्तु उनके स्थान पर केन्द्रीय सहकारी कृषि एवं ग्राम विकास बैंकों की शाखाएँ कार्यरत हैं।

भूमि विकास बैंक अपने वित्तीय स्रोतों की हिस्सा पूंजी, रक्षित निधि, जमा राशि तथा बॉण्ड अथवा ऋण-पत्र निर्गमन द्वारा प्राप्त करते हैं। इन बैंकों द्वारा जारी किए गए ऋण-पत्र दीर्घकालिक होते हैं और इनकी ब्याज-दर एवं अवधि निर्धारित रहती है। पिछले कुछ वर्षों में कृषि तथा ग्राम विकास के लिए राष्ट्रीय बैंक (नाबार्ड) ने भूमि विकास बैंकों को अनेक सुविधा उपलब्ध कराई हैं। जिससे इन बैंकों को अपने ऋणों के वितरण में बड़ी सहायता प्राप्त हुई है।

Functions of Land Development Banks:-

भूमि विकास बैंकों का मुख्य कार्य कृषि सम्पत्ति के आधार पर दीर्घकालिन ऋण देना है। साधारणतः ये बैंक प्रतिभूति के मूल्य के 50% प्रतिशत तक ऋण देते हैं। भूमि विकास बैंक अनेक उद्देश्यों के लिए ऋण उपलब्ध कराते हैं, जैसे- भूमि सुधार, पुराने ऋणों की वापसी, महंगे कृषि यंत्रों की खरीदी, कुएं खुदवाने आदि। किन्तु वर्तमान में कृषक मुख्यतः भूमि के सुधार और उन्नति के लिए ही भूमि-

Scanned with CamScanner

विकास बैंक से ऋण लेते हैं।

Problems of Land Development Banks:-

कुछ राज्यों को छोड़कर भूमि-विकास बैंक कृषकों को दीर्घकालिन साख को उपलब्ध कराने में सफल नहीं हैं। किन्तु पिछले कुछ वर्षों से इन बैंकों ने कृषि को उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार इन बैंकों द्वारा दिये गए कुल ऋणों का 70% भाग लघु सिंचाई योजनाओं के लिए दिया गया है।

वास्तविकता यह है कि भारतीय कृषि को उन्नत एवं विकसित बनाने के लिए बड़ी मात्रा में ऋणों की आवश्यकता है और इसे भूमि विकास बैंक के विद्यमान स्वरूप से हल करना बहुत कठिन कार्य है। भूमि-विकास बैंक की प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैं:-

(i) बकाया ऋणों की समस्या:- सीमित साधन होने के कारण भूमि विकास बैंकों की Lending Capacity सीमित है। इसके साथ ही बकाया ऋणों की समस्या ने इन बैंकों की सफलता पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। बकाया ऋणों की वसूली के संबंध में राज्य सरकारों को समय-समय पर अनेक सुझाव दिए गए, किन्तु इनमें से अनेक सीमित ऋण-पात्रता और वित्तीय सहायता केवल भूमि विकास बैंकों या अन्य सहकारी बैंकों की ही नहीं है, अनेक व्यापारिक बैंक भी इससे ग्रसित हैं।

अतः इस स्थिति को सुधारने के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को भी इन संस्थाओं के साथ गंभीरता से विचार करना चाहिए।

(ii) प्रशिक्षित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभाव :-
पिछले कुछ वर्षों में भूमि-विकास बैंकों के कार्यों में तेजी से विस्तार हुआ है और परिणामस्वरूप अनेक चुनौतियां भी सामने आई हैं, किन्तु इन उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने के लिये प्रशिक्षित एवं कुशल अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भर्ती नहीं हुई।
यदि इन बैंकों को अपने ऋण व्यवसाय को बढ़ाना है तो बैंकों के ऋण सम्बन्धी कानूनी प्रावधानों, सहकारी बैंकों के अधिनियमों, सहकारी समितियों के कानूनी ढाँचे आदि में परिवर्तन जरुरी है।

(iii) ऋणों का बहु-विध विकास :→
बहु विध उधार के विकास की सफलता के लिए इन बैंकों को ऋणों के विरुद्ध भूमि बन्धक रखने की परम्परा को बदलकर अन्य प्रकार की कई प्रतिभूतियों को भी स्विकार करना चाहिए।

इन उत्पादक कार्यों में पशु-पालन, मुर्गीपालन, मछली पालन, भेड़ पालन, रेशम उत्पादन, गोबर गैस प्लान्ट निर्माण, बैलगाड़ियाँ क्रय करना आदि सम्मिलित हैं।

समाप्त